

3-1

पंचाङ्ग दीपिका

12/11/1910

पंचाङ्गदीपिका ।

जिस्में

विना पत्राके पत्रा बनानेकी युक्ति कही है.

जिससे

अभ्यास करनेवाले लोग रोजरके तिथि बार
नक्षत्र योग करण शीघ्रतापूर्वक सहजही
में विना पत्राके बतला सकते हैं.

जिस्को.

श्रीमत्पंडितविद्वद्भारवाचस्पति त्रिपाठी नैमिषारण्य स-
मीप गोनीग्राम निवासीने स्वेष्टदेव की सहायतासे
अनेक ज्योतिष पुस्तकों का सारांशलेकर समस्त
द्विजातियोंके उपकारार्थ अति सरल श्लोक दो-
हादि छंदोंमें सटीक उदाहरण समेत अति-
परिश्रमसे रचना किया ॥

वही ज्योतिर्विदों के सुगमार्थ.

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई.

स्वकीय "श्रीवैकटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रकाशित किया ।

मिती वैशाख शुक्ल १ संवत् १९५३ सन् १८९६ ई०

इस पुस्तकका सर्व हक यंत्राधिकाराने स्वाधीन रखे हैं.

विज्ञापन.

विदित होकि, इन दिनोंमें तिथिपत्रके बनाने वाले पंडितकहीं हजारमें एक दो हैं वे लोग गणित बड़े परिश्रमसे बहुत दिनोंमें तिथि पत्र बना सकते हैं या पूछनेसे कुछ दिनमें कह सकते हैं अब जिले हदोंई तहसील सदीला थाना व डाकखाना अतरौली परगने गोडवा ग्राम गोनीके रहने वाले महाराज त्रिपाठी जीवरक्षणसुत पंडित वाचस्पति ज्योतिर्वित् तिलकने स्वेष्ट देवकी सहायतासे अनेक ज्योतिषकी पुस्तकोंका सारांश लेकर समस्त द्विजातियोंके उपकारार्थ "पंचागदीपिका" नाम यही पुस्तक संस्कृत व भाषा काव्य टीका उदाहरण समेत बहुतही सरल किया है जिसके अभ्यासकरने वाले मनुष्य सहजहीमें तिथि वार नक्षत्र योग करणादि पंचांगको पूछनेसे जल्दी कह सकते हैं ऐसी पुस्तक अबतक कहीं नहीं छपी थी और लोगोंको इसकी बहुतही आवश्यकता थी अतः उन लोगोंके निमित्त इस ग्रन्थालयमें छापी गई अब यह लिखते हैं कि, सब लोग इस बातको

अवश्य याद राखें कि, तिथिवारादिकोंके कहनेके समयमें किसीके आगे इस पुस्तकका श्लोक या भाषा छंद कोई कभी ना सुनावै केवल मनमें समुझि गुणि तिथ्यादिकोंको कहि देवें क्योंकि जिस्में और लोग समीपके बैठनेवाले इन सहज कुंजियोंको न जानें नहीं तो कोई २ जड़ मनुष्य कहेंगे इसमें कुछ नहीं है अब सबसे मेरी प्रथम यह प्रार्थना है कि. इस ग्रंथको पाय आद्योपांत देखि अजमाय सहज समुझि मेरेपै अवश्य आशीर्वाद करें और जो महाशय इसमें कहीं भूल चूक पावें तौ मुझे पत्रद्वारा सूचित करें मैं उनका बहुत धन्यवाद करूंगा. शुभमस्तु ।

श्रीः ।

अथ

पंचाङ्गदीपिका.

दोहा ॥

विघ्नहरण गजकरणके, चरण शरण में जाय ॥
अब पंचांग सुदीपिका, वर्णौ छंद बनाय ॥ १ ॥

विघ्नके हरनेवाले श्रीगणेशजीके चरणारविंदोंके
शरणमें जाइके मैं अब स्वकृत दोहा चौपाई आदि
छंदोंमें पंचांग दीपिका नाम इस ग्रंथको वर्णन कर
ताहौं १ ॥

तिथि अरु वार नक्षत्र पुनि, योग कर्ण विधि मानु ॥
वाचस्पति पंडित कहत, बिन पत्रा सब जानु ॥ २ ॥

कि, प्रतिपदादि पंद्रहौ तिथी और एत
वारसे सातों वार और अश्विन्यादि सत्ताईसौ
नक्षत्र और विष्कम्भादि सत्ताईसौ योग और ब

वादि ग्यारहौ करण ये पांचौ कालात्मक ईश्वरके अनुवर्ती देवगण इस संसारमें दिन प्रति रोज २ अपनी २ अमलदारीको करते आते जाते हैं इन्हीं तिथ्यादिकों को ज्योतिषी लोग पत्रादेख कर बताते हैं अब मैं वाचस्पति नाम पंडित कहता हूँ कि, विना पत्रादेखे रोज २ के तिथि वार नक्षत्र योग करणोंको यथार्थ मनमें जानि बहुत जल्दीमें पूछनेवालेको बतादेवै वही युक्ति मैं अब लिखता हूँ ॥

श्लोक ॥ मासभाच्चंद्रभंगण्यात्संख्यायावत्प्रवर्तते ॥ तावत्तिथिविजानीयाद्वाचस्पतिसुशोधितम् ॥ १ ॥

दोहा ॥

मास नखत ते जै नखत, वर्तमान लग होंइ ॥
तेपहिले गनि लीजिये, तिथी जानिये सोइ ॥ १ ॥

तिसमें पहिले विना तिथि पत्रा रोज २ की तिथि के विचारने की युक्ति कहते हैं कि महीना की पौर्णमासी बीती हुई के आगे नक्षत्रसे जिसदिनकी

कोई तिथि पूछे तौ उस दिनके नक्षत्र तक गनै जै होय तौनि तिथि कृष्णपक्ष की परेवासे गनिकै कहै अब मास नक्षत्र सुनौ कि चैतीको चित्रा, वैशाखीको विशाखा, ज्येष्ठी को ज्येष्ठा, आषाढीको पूर्वाषाढ़, श्रावणी को श्रवण धनिष्ठासे, भदईको पूर्व भाद्रपद से कुंआरीको अश्विनी, कार्तिकीको कृत्तिका, अगहनीको मृगशिराद्रा पूसीको पुष्य, माघी को मघा, फगुई को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र सदाहोती हैं (उदाहरण) जैसे किसीने पूछा कि संवत् १९९१ के साल आषाढ़के महीनामें हस्त नक्षत्रको कौन तिथि, होगी तौ देखा कि मास नक्षत्र ज्येष्ठीके दिन ज्येष्ठा है तिसके आगे नक्षत्र मूलठहरा तिससे हस्ततकगना तौ २२ भये फिर आषाढ़के कृष्णपक्षकी परेवासे वाइस तक देखा कि वईसईको कोई तिथि नहीं होती है इससे देखा कि १५ और ७ वाइस होते हैं तो मालूमहोगया कि १५ तिथियों से कृष्णपक्ष आषाढ़ कां बीतिगया और जो ७ वचे तो शुक्लपक्षकी सप्तमी ठहरी, तो उस पूछने वाले से कहा कि शुक्लपक्षकी सप्तमीहै पत्रामें देखिलेउ १

श्लोक ॥ साद्वैकग्रंमधोर्मासंगतपक्ष
दिनैर्युतम् ॥ मुनिभक्तंगणेच्छेषराज्ञोवै
वासरंभवेत् ॥ २ ॥

सवैया सिंहावलोकन ॥

पाइवो चैतसे डेवढकै गनि मास गये दिन जोरि
मिलाइवो । लाइवो सातसोंभाग लगाइ बचेंतिन
अंकलों खोजु लगाइवो ॥ गाइवो संवत्के नृपते
गनि शेषलौ बीचसभा मसुनाइवो । नाइवोहै शिर
ज्योतिषके विन दै सबको जगमें यश पाइवो । २ ।

अथ विनापत्रा वार बतानेकी युक्ति कहतेहैं ॥

कि, चैत्र शुक्लकी परेवासे महीना गत गनिकै
डेवढ करै फिर वर्तमान मास पक्षके बीतेहुये दिन
उसीमें जोरिदेइ और सातका भाग लेइ जै शेष
वचें तैवार जानी राजासे ठानिकै चैत्रशुक्ल
परेवाका जो दिन होइ सो राजा कहावतिहै साल
भर तक (उदारण) जैसे किसीने कहा कि अच्छा
इसी १९९१ के सालमें श्रावण बदी पंचमीके

वतावो कौन दिन है तौ इहां चैत्रशुक्ल परेवासे
गना तो आषाढ़ बदी अमावस तकके ३
महीना भये तिनको डेवढ़ किया तो तीन डेवढ़े
साढ़ेचार ४॥ भये गत पक्ष अषाढ़ी तकके १५ दिन
और श्रावण बदी पंचमीतकके गत दिन चारि ४
सब एकमे जोरे तो १९ भये तिसमे महीनोंके डेवढ़े
अंक ४॥ साढ़ेचार सो उसीमें जोरे तो २३॥ भये
उसमें सातका भाग लीन तौ साततिथ्यौ २१और २॥
साढ़े २३तेइस होतिहैं तो २॥ बचे फिरि उस सालके
राजा शनिश्चरसे गना तो २॥ अढ़ाई पर सोमवार
की दुपहर ठहरी तौ कहा कि सोमवारहै पत्रामें
देखिलेउ ॥ २ ॥

श्लोक ॥ मासभातिथिपर्यंतयावत्सं
ख्याप्रवर्तते ॥ तावत्संख्याकनक्षत्रं
वाचस्पतिविचारितम् ॥ ३ ॥

दोहा ॥

गनिथे मास नक्षत्रसे, वर्तमान तिथि यत्र ॥
जितने पर गनि तिथि मिलै, तितने पर नक्षत्रा ॥ ३॥

अथ राजचक्रम् ।

संवत्.	संवत्.	संवत्.
१८४७	६७वृ.	८८मं.
४८चं.	६८	८९चं.
४९शु.	६९श.	९०शु.
५०	७०शु.	९१वृ.
५१मं.	७१मं.	९२चं.
५२	७२चं.	९३शु.
५३ शु.	७३शु.	९४वृ.
५४बु	७४मं	९५चं.
५५	७५चं	९६श.
५६	७६शु.	९७शु.
५७बु.	७७बु.	९८बु.
५८र.	७८मं.	९९चं
५९श.	७९	१८७०शु.
६०वृ.	८०श.	०१० मं.
६१बु.	८१बु.	०२चं.
६२	८२र.	०३श.
६३	८३स	०४बु.
६४	८४बु.	०५मं.
६५चं.	८५र.	०६र.
६६शु.	८६श.	०७बु.
	८७वृ.	

संवत्.	संवत्.	संवत्.
०८ बु.	२४ शु.	४१ शु.
०९ र.	२५ बु.	४२ मं
१० स.	२६ र.	४३ चं.
११ बु.	२७ श.	४४ शु.
१२ चं	२८ बु.	४५ वृ.
१३ र.	२९ चं.	४६ चं.
१४ वृ.	३० श.	४७ शु.
१५ म.	३१ वृ.	४८ वृ.
१६ चं	३२ बु.	४९ मं,
१७ शु.	३३ र.	५० र.
१८ वृ.	३४ शु.	५१ श.
१९ चं	३५ बु.-३६ र.	५२ बु.
२० शु.	३७ श.	५३ र.
२१ वृ.	३८ बु.	५४
२२ मं.	३९ चं.	५५
२३ श.	४० र.	५६
		५७

अथ विनापत्रा रोज २के नक्षत्र जाननेकी युक्ति लिखतेहैं
किं महीनाका जो नक्षत्रहै उस नक्षत्रके आगे नक्ष
त्रसे जिस महीनेमें जौने पक्षकी तिथिके नक्षत्र
को कोई पूछै, तिस तिथिकी गन्ती तक गनै, जै होइ
तौनि संख्या गनि नक्षत्र कहै (उदाहरण) जैसे

किसीने पूछा कि संवत् १९५१ में श्रावणशुक्ल
द्विजको कौन नक्षत्र होगा तौ विचारमें देखा कि
श्रावणके महीनामें तो पूछतेहीहैं इससे उसको
छोड़दिया और उसके पहिले आषाढीको मास
नक्षत्र पूर्वाषाढहैं उसके आगे उत्तराषाढसे श्रावण
शुक्ल द्विज तक गना तौ अमावस तकके १५दिन
और शुक्लकी द्विजितकके द्वै दिन सब जोड़के १७
भये तौ सत्रहों १७ मघा नक्षत्र ठहरा पत्रामें देखि
लेउ जरूर होगा ॥ ३ ॥

श्लोक ॥ गणेच्चपुष्यादद्युमणेस्समृक्षं
श्रोत्रात्तथा चांद्रभमत्रयुक्तम् ॥ भजेत्पुन
स्सप्तसुविंशकेनशेषे क्रमाद्वैप्रवदेच्चयो
गान् ॥ ४ ॥

दोधकछंद ॥

पुष्यते भानु नक्षत्र गनीजै । श्रवणते चंद्र ऋक्ष
धरि लीजै ॥ जोरिक भाग सताइस लेहू ॥ विष्कुं
भादियोग कहि देहू ॥ ४ ॥

अथ विनापत्राके रोज २ के विष्कंभादि २७ सत्ताइसौ
योग कहनेकी युक्ति लिखतेहैं ।

कि पुण्य नक्षत्रसे जिस दिनके योग कोई पूछै तो
उनदिनोंके सूर्यके नक्षत्र तकगनै और वैसेही श्रवण
नक्षत्रसे जिसदिनका योग पूछा गयाहै उसी दिनके
नक्षत्र तक गनि सब एकमे जोरि २७ सत्ताइससे
भाग लेइ शेषवची संख्या तक विष्कुंभसे गनियोग
बतावै (उदाहरण) जैसे किसीने पूछा कि सम्बत्
१९५१ में उसी श्रावण सुदी शुक्रवार द्वीज मघा
नक्षत्रको विष्कुंभादिकों मेंसे कौन योग होगा । तब
उस्से पूछा कि उन दिनोंमें सूर्य किस नक्षत्र केहैं
उसने कहा श्लेषाके तब पुण्यसे श्लेषातक गना तौ
दुइभये तो इहां सत्ताइसका भाग नहीं लगावैसेही
श्रवण नक्षत्रसे उसदिनके नक्षत्र मघातक गनातौ
१६ भये सर्व एकमें जोरे १८ भये तब विष्कुंभ
से गना तौ अठरहों वरियान योग ठहरा अपने
पत्रामें देखि लेउ अवश्यही होगा ४

श्लोक ॥ तिथिचद्विगुणीकृत्यत्वेक
हीनचकारयेत् ॥ सप्तभिश्चहरेद्भागंशे

पांतेकर्णमादिशेत् ॥ ५ ॥ शुक्लस्ययावै
 प्रतिपञ्चतस्यां किंस्तुघ्नकर्णस्तुपरेबवश्च
 कृष्णेपरेशम्भु १४ तिथौचशाकुनि
 श्चतुष्पदोनागयुतस्त्वमायाम् ॥ ६ ॥

दोहा ॥

तिथि धरि दूनी एक पुनि, जो ऊनी करि देइ ॥
 भाजिसातसों शेष क्रम, कर्ण अंत तिथि लेइ ॥५॥
 शुक्ल एक किंतुघ्नवव, कृष्ण चतुर्दशि भाग ॥
 पश्चिममें शकुनी करण, अमाचतुष्पद नाग ॥६॥

अथ विनापत्रा रोज रोजके करण बतानेकी

युक्ति लिखते हैं

कि, जिसदिनका करण जाननाहो उस दिनकी
 तिथिको शुक्लपक्षकी परेवासे गनि दूनकरं और
 सातसे भाग लेइ जै शेषवचें तौ नुववादि सात ७
 चर करण नमका करण जानी और उस पूछने वाले
 से कहौ कि पूछी हुई तिथि के परार्द्धमें मिलैग

और पूर्वार्द्धमें उसके पहिलेका करण होवैगा और शुक्लपक्षकी परेवाके पूर्वार्द्धमें और कृष्णपक्षकी चौदासके परार्द्धमें और अमावसको इन सात चर कारणोंमें से कोई करण नहीं मिलैगा क्योंकि इनमें सदैव स्थिर करण होतेहैं सो आगेके श्लोकमें लिखतेहैं देख लीजिये अब चारों स्थिर करण जाननेकी युक्ति लिखतेहैं कि सदा शुक्लपक्षकी परेवाको पूर्वार्द्धमें किंस्तुघ्न और परार्द्धमें ववकरण होताहै और ऐसेही कृष्णपक्षकी चौदासके परार्द्धमें शकुनि करण होताहै और अमावसके पूर्वार्द्धमें चतुष्पद और परार्द्धमें नाग नाम करण होताहै (उदाहरण) जैसे किसीने कहाकि अच्छा बतावो इसी संवत् १९५१ में श्रावणीको कौन करण होगा अब इहां देखोकि शुक्लपक्षकी परेवा से गना तो पूर्णमासी तक १५ अंक भये इनको दून-किया तो ३० भये उसमें १ एक कमकार दिया तो २९ रहे उसमें ७ सातसे भागलिया तो सात चौक अट्ठाइस शेष एक रहातो इहां पहिले ववकरणसे गनातो ववैकरण ठहरा पूर्णमासिके परार्द्धमें और उसके पूर्वार्द्धमें उससे पहिलेका विष्टि नाम करण

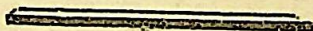
अर्थात् भद्रा होंगे इन गेरहों करणोंको तिथ्यर्द्ध कहतेहैं क्योंकि एक करण तिथि आधीको भोग ताहै फिरि इसी तरह उसके आगेका दूसरा करण भोगता है ॥ ६ ॥

श्लोक ॥ इदंतुवाचस्पतिनात्रिपाठि
नाकृतंहिगोनीगुणिग्रामवासिना ॥ वि
लोक्यशुध्यंतुसुबालशिक्षणं क्षमाप्य
सर्वममसाहसंबुधाः ॥ ७ ॥ भूबाणनंदचं
द्राब्देवैक्रमेदशमेमया ॥ धात्रिनक्षत्रगेमू
र्यैकृतंपंचांगवर्तनम् ॥ ८ ॥

यह पंचांगदीपिका नाम पुस्तक मैं पंडित वाच
स्पति नाम तेवारी गोनी ग्रामके रहने वालेने
बाल बुद्धियोंके उपकारार्थ नवीन पुस्तक बड़े
परिश्रमसे बनाईहै विद्वज्जन इसे देखके अच्छी
तरहसे सोधि मेरे श्रमको सफल करें और मेरे
साहसको क्षमापन करें ॥ ७ ॥ वैक्रमी सम्वत् १९६१

मैं रोहिणी नक्षत्रके सूर्यनमें अश्विनी नक्षत्रको
यही पंचांग वर्तनेकी पुस्तक मैंने बनाई या दूसरे
अर्थसे इसी श्लोकमें इस पुस्तक बनानेके समयका
पंचांग यथा वार नक्षत्र योग तिथि करण कह
दिया जिसको उत्तम ज्योतिषी पंडित लोग भली
भांति जानकर मेरे श्रमको सफल करेंगे और
पंचांगभी कहसकेंगे जिसे ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी
वृहस्पति सौभाग्ययोग बालवकर्ण स्पष्ट होताहै

इति श्रीमत्पंडितवाचस्पतित्रिपाठीविरचिता पंचांग
दीपिका समाप्ता ॥ शुभमस्तुतराम्
श्रीकृष्णार्पणमस्तु दीर्घायुरस्तुशुभमस्तु ।



इति
पञ्चांगदीपिका.
समाप्ता ।

ओम् ३ हरिः

नष्टजन्माङ्गदीपिका.

जिस्में

सहजही शीघ्रते नष्टकुण्डलीके वर्तनेकी युक्ति
जन्माङ्गचक्रसे संपूर्ण कही है.

जिस्से

संवत्, शाका, सन्, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि,
वार, नक्षत्र, योग, कर्ण, इष्ट, इष्टशोधन, दिनरात्रि-
कजन्म, कन्या, पुत्रकजन्मपत्र, मृत, जीवित-
की जन्मपत्री, स्त्री पुरुषमें प्रथम मृतकक परि-
ज्ञान, जन्माङ्गसे गर्भ, गर्भवतीप्रश्न, गुप्त-
तिलादि कथन, अनेक गुप्तचिह्न शीघ्र
मालूम होते हैं ।

जिस्को

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई

स्वकीय " श्रीवेंकटेश्वर " छापाखानामें

छापकर प्रकाशित किया ।

मिती वैशाख शुक्ल १ संवत् १९५३ सन् १८९६ ई०

जिसको

श्रीमत् परमोदार, मित्रवर्य पण्डित ललता-
प्रसाद शुक्ल व रामलाल, भगवानदीनकी आज्ञासे
श्रीयुत पण्डित वाचस्पति ज्योतिर्वित्तिलक, गो-
नीग्रामनिवासी ने स्वेष्ट देवकी सहायतासे, भृ-
गुसंहिता, गर्ग, मनोरमादि, अनेक पुस्तकोंको सा-
रांश लेकर, समस्त द्विजातियोंके उपकारार्थ, अ-
ति सरल, श्लोक, दोहा, चौपाई आदि ललित
छंदोंमें, उदाहरण समेत रचना किया.

विज्ञापनम्.

विदित होकि, इन दिनोंमें नष्टजन्म कुण्डली वर्तने वाला पण्डित हजारमें कहीं एक सुन पड़ेगा सोऊ परखने पर ढोलके भीतर पोलही ठहरैगा क्योंकि नष्टको वर्तना बहुतसी ज्योतिषकी पुस्तकों मेंथा और कोई कोई जानते भीथे परंच छिपाने व न बतानेके कारणसे जाता रहा अब कुछ २ भैने बडे परिश्रमसे इकट्ठा किया और वह अब विदित करताहूँ काहेसेकि संसारमें जीवन थोडे रोजके वास्ते है और न मालूम चोला कब छुट जावै अगर विदित होजायगा तौ ब्राह्मणोंको बहुत उपकारी होगा अब केवल जन्माङ्ग चक्रसे क्षण मात्रमें कुल्य नष्ट कुण्डली वर्ति देना अर्थात् विना लिखे देखे विना जाने समझे जन्मका सम्बत् शाका, सन्, हिजरी, फसली, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, कर्ण, इष्ट, इष्टशो

धन, दिनरात्रिका ज्ञान, कन्या पुत्रकी, पत्र, स्त्री पुरुषोंमें प्रथम मृत्यु ज्ञान, जन्मेतेगर्भ, कन्या पुत्र भवितव्य, लिंगयोनिस्थ तिल कथनादि समस्त जन्मके हालको जल्दमें कहि देने वाली कोई ऐसी पुस्तक अब तक नहीं छपी थी औ लोगोंको इसकी बहुतही आवश्यकता थी अतः उनके निमित्त, नष्ट जन्माङ्ग दीपिका नाम पुस्तक, जिसमें नाना प्रकारके ललित छंदसे, संस्कृत व भाषा काव्य टीका उदाहरण समेत बहुतही सरल किया है, इस वास्ते कि, जे, संस्कृतज्ञ हैं वे संस्कृतसे और जे भाषा काव्यके जानने वाले हैं वे भाषा काव्यसे और जिनको बहुतही कम बोध है वे उदाहरणसे सब समझेंगे परंच सब लोग यह जरूर याद राखें कि नष्ट वर्तते समयमें इस पुस्तकका श्लोक या भाषा छन्द कोई न पढ़ें सिर्फ मनमें समुझि गुनि नष्ट वर्ति दें, क्योंकि जिसमें और लोग समीपके बैठने वाले इन सहजी कुंजियों को न जानें नहीं तो कोई २ जड़जीव कहेंगे कि इसमें कुछ नहीं है अब प्रार्थना यह है कि जो महाशय इसमें कहीं भूल बूक पावें वे मुझे पत्र द्वारा सूचित करें तौ मैं

बहुत धन्यवाद दूंगा दूसरे यहकि कोई महाशय
इस मेरे ग्रंथको पावें तौ आद्योपांत देखि' सहजी
कुंजी जानि अजमाकर प्रसन्नहै मेरेको जरूर आ
शीर्वाद देवें किं बहुना बहुज्ञेषु शुभमस्तुतराम् ॥

इति ।

श्रीः ।

अथ

नष्टजन्माङ्गदीपिका ।



विघ्नेश्वरं नमस्कृत्य स्वेष्टदेवं च भार-
तीम् ॥ कुर्वेद्विजहितार्थाय नष्टजन्माङ्ग-
दीपिकाम् ॥ १ ॥

दोहा

श्रीगणपति अरु भारती, इष्टदेव शिरनाय ॥
द्विजहित नष्ट सुदीपिका, वरणौ अतिसुखदाय ॥ १ ॥

प्रथम, गणेशजी औ इष्टदेव अर्थात् लक्ष्मी
नारायण और सरस्वतीजीके नमस्कार करके
ब्राह्मणोंके हितके वास्ते नष्टजन्माङ्गदीपिका
नाम यह पुस्तक मैं बनाता हूं ॥ १ ॥

तथापिकीटास्तेस्पष्टंक्रूरायद्यपिनोमृ
ताः॥ नहियूकभयल्लोकोकंथांत्यजतिनि
र्भयः ॥ २ ॥

यदपि क्रूर बहु जियति यग, तदपि खुलासा योग॥
जूकनकी भय समुझि नहिं, आसन त्यागत लोग॥

तथापि निडर होकर इसको खुलासा करताहूं
यद्यपि क्रूर मनुष्य अभी मरे नहीं हैं जैसे निर्भय
मनुष्य जुवाँके डरसे अपने बिछावने वाले वस्त्रकी
नही त्यागते हैं ॥ २ ॥

गोनीग्रामेनैमिषादग्निकोणेसप्तक्रोसे
वर्ततेमेनिवासः।यस्योत्कृष्टंनामवाचरूप
तीतिवेदत्रय्यांयस्त्रिपाठित्वमाप ॥ ३ ॥

साढे दशघर कश्यपी, कहे तिवारी जौन ॥
गल्हू वरुवा श्रेष्ठ घर, अहइमोर कुलतौन ॥ ३ ॥

कुंडलिया ॥

नेरे मम स्थानहै सात कोस परमान ॥

नैमिषसे अग्रेय दिशि वसत जहां गुणमान ॥
 वसत जहां गुणमान मान जाहिर जगजानहु ॥
 संदीला तहसोल सदर हरदोई मानहु ॥
 कहि वाचस्पति पास परगना गोंडवाकरे ॥
 गोनी मम स्थान थान अतरौली नेरे ॥ ३ ॥

अब मैं अपना पता लिखता हूँ कि गोनीमें मेरा
 मकान है नैमिषारण्य से सात कोसपर अग्नि कोण
 की तरफमें वाचस्पतिनाम गल्हूको तेवारी हूँ अब
 चिट्टी के पहुँचनेका पता लिखता हूँ जिला हरदोई,
 तहसिल संदीला, थाने अतरौली, परगने गोंडवा
 साकिन गोनीमें पावैं पंडित वाचस्पति ॥ ३ ॥

यथामतिकरिष्यामिविप्राणामुपजी
 विनं॥ सुशोधनीयंविद्वद्भिःक्षमित्वान्मम
 साहसम् ॥ ४ ॥

चौपाई ॥

जे द्विज देखहि काव्य हमारी ॥ तिनके चरण
 शीशहमधारी ॥ द्विजते इतर विलोकहि कोई ॥

मम अनेक आशिष तिन होई ॥ ४ ॥
 जो कछु भूल चूक मम देखैं ॥ क्षमिअपराध शुद्ध
 करि लेखैं ॥ छंद भंग आदिक परिजावै ॥
 द्विज हित जानि न मोहि सतावै ॥ ४ ॥

मैं अपनी बुद्धिके अनुसार ब्राह्मणों की आजी-
 विकाके वास्ते इस ग्रंथको बनाता हूँ विद्वान लोग
 शोध लेंवें और मेरे साहसका क्षमापन करें ॥ ४ ॥

शून्येषुनन्दचंद्राख्येवर्षेश्रीविक्रमाद्ग
 ते ॥ चैत्रासितदशम्यांचग्रन्थारंभःकृतो
 मया ॥ ५ ॥

दोहा ॥

एकसंहसनौसैकरा, संवत् और पचाश ॥
 चैत कृष्ण एकादशी, कीन्हों ग्रन्थ प्रकाश ॥ ५ ॥

संवत् १९५० चैत्र कृष्ण एकादशीको इस ग्रन्थ
 द्वारा नष्टवर्तनेकी युक्ति प्रकाश किया ॥ ५ ॥

जन्माङ्गकुण्डलीचक्रं युक्त्या संप्रक्ष
येद्बुधः ॥ ज्ञात्वा शुद्धं ग्रहैस्तस्माद्दर्शमा
सादिकान्वदेत् ॥ ६ ॥

द्रुत विलंबितछन्द ॥

जनम अंगक चक्र सुशोधिकै ॥ युगुति भे सवु पूं
छि सुवोधिकै ॥ ग्रहनभे फिरि शुद्ध विचारिये ॥
वरष आदिक सर्व प्रचारिये ॥ ६ ॥

अब जिसकी नष्ट कुण्डली वर्तना चाहै उसके
जन्माङ्ग चक्रके दो चारि ग्रह युक्तिभे उससे पूंछि
लेवै प्रथम यह पूंछै कि तुम अपनी जन्म कुण्डली
का कोईसा एक ग्रह बताओ कि किस राशिके
किस घरमें है और अपनी राशिका नाम व,
चंद्रमा बतावो कहां है और तुम्हारा किस मही
नेका जन्म और सूर्य कहां हैं और शनि बृह-
स्पति राहु कहां है या केवल जन्माङ्ग चक्र देदो
बस इसीसे नष्ट वर्ष मासादि बनि जाँयगे जो
वर्षादिकों का (ग्रहोंसे परस्पर संबंध नबँधै तौ

उसकी बताई बातें वा. उसका दिया जन्माङ्ग चक्र अशुद्ध है (उदाहरण) जैसे किसीसे पूछा कि तुम्हारा किस महीनेका जन्म है और कुण्डलीमें सूर्य किस घरमें हैं, उन्होंने कहा कि ज्येष्ठका जन्म औ लग्नमें सूर्य हैं बस इसीसे मालूम भया कि वृष लग्नके सूर्य हैं क्योंकि सदा मेषके सूर्य वैशाखमें और वृषके ज्येष्ठमें होते हैं ऐसेही एक २ महीनेमें एक २ राशि भोग करते हैं बस जबकि लग्न मालूम होगई तौ जिन २ भावोंमें ग्रहों की स्थिति सुनौगे तिन २ ग्रहों की राशि स्थिति जरूर जानि पावौगे (उदाहरण) जैसे किसीने पूछा कि तुम्हारी राशि का नाम कौन है उन्होंने कहा कि चैतराम नाम है। तौ होडाचक्र से मालूम भया कि अश्वनीके दूसरे चरणका जन्म औ मेष राशि का चन्द्रमा द्वादशभावमें है जौन राशि होती है उसीमें चन्द्रमासदार-हता है तिसके बाद फिर पूछा कि शनि गुरु राहु कहां है उन्होंने कहा कि शनि पंचम भावमें औ गुरु राहु षष्ठ भावमें हैं तौ मालूम भया कि कन्या के शनि औ तुलाके बृहस्पति राहु हैं बस पाहिले

कुल्य इतना जानलेनेसे सब नष्ट वर्ष मासादि
अर्थात् कुल्य नष्ट कुण्डली वर्ति सकते हौ ॥ ६ ॥

मंदजीवागुभिर्वर्षवर्षाच्छाकं शका
त्सनम् ॥ ऋतुमासायनं सूर्यात्पक्षं चन्द्रा
द्विनिर्दिशेत् ॥ ७ ॥

तारक छन्द ॥

शनि औ गुरु राहुते वर्ष बतावै । पुनि वर्षते साक
सनादिक गावै ॥ ऋतु मास सुऐन दिनेश भेजानी ॥
पुनि पक्ष कुपक्ष सुचंद्रते मानी ॥ इति तारक छंद ७

अब शनि औ बृहस्पति राहु ते वर्ष औ
वर्षते शाका औ शाकेसे फस्ली औ ईस्वी सन्
औ सूर्यसे अयन ऋतु मास औ चंद्रमासे पक्ष
दो बतावै ॥ ७ ॥

तिथिवारंचनक्षत्रं योगंकरणमेवच ॥ इष्टं
दिवादिकं सर्वदुतं नष्टं प्रवर्तयेत् ॥ ८ ॥

तिथि वार नक्षत्र योग कर्ण ॥ पुनि इष्ट दिवा-
दिक भोग मर्ण ॥ कहिहौं अशेष द्विज देव हेत ।
तिनके अशेष सुखके निकेत ॥ ८ ॥

तिस्के बाद तिथि वार नक्षत्र योग कर्ण इष्ट
दिन या रात्रिका जन्म आदि नष्ट बहुत शीघ्र मे
वर्ति देवै ॥ ८ ॥

जन्माङ्गचक्रस्थितमंदराशेः संजात
संवत्सरमंदराशिं ॥ गणेच्चसार्धद्वयवर्ष
भिश्चगुण्यात्तदंकंगतवत्सरं स्यात् ॥ ९ ॥

जन्माङ्गजीवस्य तथा भचक्रं गुण्याच्च
संवत्सरजीवराशिम् ॥ एकैकमासप्रतिव
र्षयोजिते स्फुटानिवर्षाणिवदेज्जनानाम् ॥

जन्माङ्गराहोर्गणयेत्तैव संजातवर्ष
स्थभचक्रराहुं ॥ सार्धैकवर्षेण च वर्षसंख्यां

गुण्यात्पुनर्वैदृढवत्सरं स्यात् ॥ ११ ॥

शनिस्मायातिपुनस्स्वराशिवर्षाणि
त्रिंशद्वादितानि भुङ्क्त्वा ॥ राहुस्स्त
थाष्टादशवत्सराणि एकैकवर्षं च गुरुस्सुयु
क्तम् ॥ १२ ॥

श्रीमद्विक्रमवत्सरेषु च बुधः संशोधये
द्वैयदा ॥ शीघ्रं बाण (५) गुणं (३) दु
(१) वर्षं निलयं शाको भवेद्वैतदा ॥ शाकां
केषु च योजयेद्वसु (८) मुनी ७ स्याद्वै
सनोर्द्विसवीतद्वै शोधितबाण (५) चंद्र (१) इ
षुभिः (५) फस्ती भवेद्वै सनः ॥ १३ ॥

कवित्त ॥

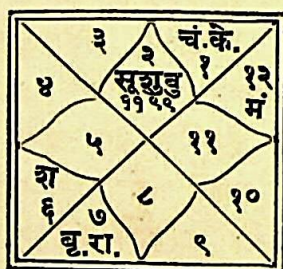
मंद ९ औ १० बृहस्पति पुनि राहु केरी राशिनते
वर्तमान संवत् ग्रह राशिलौ गनावौ मे ॥ ११ ॥

(३४)

नष्टजन्माङ्गदीपिका.

मंदकी अठाई वर्ष गनिकै बृहस्पति एक राहु डे-
ढ उलटो गनि वर्षे बनावौमैं ॥ १२ ॥

संवतसे साको शालिवाहन बंतावो चहै एकसै
पैतिस घटै शेषको सुनावौमैं ॥ पांचसै पन्द्रह घ-
टाये सन् फसली होत साकेमें अठत्तरि जोरि
ईसवी जनावौमैं ॥ १३ ॥



अथ संवत् निस्सारण ॥

जन्मकुण्डलीमें शनि जिस राशिके हों उसके आगे
की राशिते वर्तमान संवत्की राशितक गनै अठाई
गुण कीन्हेसे गत वर्षे होती हैं। गत वर्षोंको वर्तमान
संवत् में घटानेसे जन्मका संवत् निकलता है
(उदाहरण) जैसे इस चेतारामके जन्माङ्गवक्रमें शनि

कन्याके हैं उसके आगेकी राशि तुला है तिस्ते
वर्तमान १९५१ के संवत्में शनि कन्या राशिके
हैं तहां तक गनै तौ तुलासे कन्या तक बारहमे
अढ़ाई गुण कीन्ह तौ बारह अढ़ाई तीस गत वर्ष
भई तौनी तीस गत वर्षोंको वर्तमान संवत् १९५१
में घटानेसे १९२१ के संवत्का जन्म ठहरा
इति ॥ ९ ॥

अथ पुष्टसंवत्करणम् ॥

फिर ऐसेही जन्माङ्ग की बृहस्पतिसे वर्ष
की बृहस्पति तक गनै औ जो बृहस्पतिके
अंश थोरे बीते होंइ तौ जै वर्ष होंय तै मही-
नों की वर्षें और जोड़ै औ जो बृहस्पतिके अंश
बहुत बीते होंय तौ महीनों की वर्षें न जोड़ै और
उसमें से भी एक वर्ष निकासि जै गत वर्षें होंय तै
वर्तमान संवत्में घटै संवत् कहि देय (उदाहरण)
जैसे इस जन्माङ्गमें तुला की बृहस्पति है औ
१९५१ के संवत् में वृषकी लगी है तौ वृश्चिकसे
वृष तक ७ भे औ दो आवृत्तिनसे २४ भे सब एक
तिस वर्षें भई तिस हूंमें एक वर्ष निकासि डारी
औ कोई महीनोंकी वर्ष भी नहीं जोड़ी क्योंकि

दोनों बृहस्पतिके बहुत अंश बीते हैं इससे तीस वषें कायमरहीं उनको संवत् १९५१ में घटानेसे १९२१ के संवत्का जन्म ठहरा इति ॥ १० ॥

अथ पुष्ट से पुष्ट सम्बत् करणम् ॥

फिर ऐसेहीं उलटा जन्माङ्ग के राहु से संवत्के राहु तक गनै औ डेढ़ गुने करै जै गत वषें होय तिनहैं वर्तमान संवत्में घटावै तौ संवत् होय(उदाहरण) जैसे चैतरामके जन्माङ्ग राहु तुला काहै औ १९५१ के संवत्का राहु मीनका है तौ तुला से बृश्चिक तक उलटा गना तौ बारहमे डेढ़गुण बारह ड्योढ़े अठारह वषें भई फिर तुला से मीन तक उलटा गना तौ आठ ड्योढ़े बारह भई कुल्य एकैमें जोड़नेसे तीस वषें भई तिनहैं संवत् १९५१ में घटाय देनेसे १९२१ के सम्बत्का जन्म ठहरा इसमें राहुकी गतराशि नहीं की वर्तमानै राहुकी राशि गनी काहेसे कि राहुके बहुत कम अंशबीते हैं इति ॥ ११ ॥

वर्षके जोरते समयमें यह बात जरूर यादि राखै कि शनि अठाई २ वर्ष एक २ राशिकी भोगता

हैं और ३० वर्ष बाद उसी राशि पर फिर आता है ऐसेही बृहस्पति तेरह २ महीना और बारह वर्ष बाद फिर उसी राशि पर आता है ऐसेही राहु डेढ़ २ वर्ष वक्र हैंकै एक २ राशिको भोग करता है औ अठारह वर्ष बाद फिर उसी राशि पर आजाता है ॥ १२ ॥

अथ संवत्से शाका निकालनेकी युक्ति

संवत्में १३५ घटानेसे शाका शालिवाहनीय निकलता है जैसे चेतारामको १९२१ के संवत्का जन्म है तिसमें १३५ घटानेसे शालिवाहनीय शाके १७८६ भे ऐसेही शाकेमें ७८ जोड़नेसे ईसवी सन् औ ५१५ घटानेसे फसली सन् होते हैं जैसे १७८६ के शाकामें ७८ जोड़नेसे १८६४ ईसवी सन् औ ५१५ घटानेसे १२७१ फसलीसन्का जन्म भया ॥ १३ ॥ इति

मकरादिभषट्सुसंस्थिते द्युमणावुद
गयनं प्रचक्षते ॥ कर्कादिभषट्सुवैयदा
अयनं दक्षिणकं वदेत्तदा ॥ १४ ॥

दोनों बृहस्पतिके बहुत अंश बीते हैं इससे तीस वषैं
कायमरहीं उनको संवत् १९५१ में घटानेसे १९२१
के संवत्का जन्म ठहरा इति ॥ १० ॥

अथ पुष्ट से पुष्ट सम्बत् करणम् ॥

फिर ऐसेही उलटा जन्माङ्ग के राहु से
संवत्के राहु तक गनै औ डेढ़ गुने करै जै
गत वषैं होय तिन्हैं वर्तमान संवत्में घटावै
तौ संवत् होय(उदाहरण) जैसे चेतारामके जन्माङ्ग
राहु तुला काहै औ १९५१ के संवत्का राहु
मीनका है तौ तुला से वृश्चिक तक उलटा
गना तौ बारहमे डेढ़गुण बारह ड्योढ़े अठारह
वषैं भई फिर तुला से मीन तक उलटा
गना तौ आठ ड्योढ़े बारह भई कुल्य एकैमें
जोड़नेसे तीस वषैं भई तिन्हैं संवत् १९५१ में
घटाय देनेसे १९२१ के सम्बत्का जन्म ठहरा इसमें
राहुकी गतराशि नहीं की वर्तमानै राहुकी राशि
गनी काहेसे कि राहुके बहुत कम अंशबीते हैं
इति ॥ ११ ॥

वर्षके जोरते समयमें यह बात जरूर यादि राखै
कि शनि अठारह वर्ष एक २ राशिको भोगता

है और ३० वर्ष बाद उसी राशि पर फिर आता है ऐसेही बृहस्पति तेरह २ महीना और बारह वर्ष बाद फिर उसी राशि पर आता है ऐसेही राहु डेढ़ २ वर्ष वक्र द्वैक एक २ राशिको भोग करता है औ अठारह वर्ष बाद फिर उसी राशि पर आजाता है ॥ १२ ॥

अथ संवत्से शाका निकालनेकी युक्ति

संवत्में १३५ घटानेसे शाका शालिवाहनीय निकलता है जैसे चेतारामको १९२१ के संवत्का जन्म है तिसमें १३५ घटानेसे शालिवाहनीय शाके १७८६ भे ऐसेही शाकेमें ७८ जोड़नेसे ईसवी सन् औ ५१५ घटानेसे फसली सन् होतेहैं जैसे १७८६ के शाकामें ७८ जोड़नेसे १८६४ ईसवी सन् औ ५१५ घटानेसे १२७१ फसलीसन्का जन्म भया ॥ १३ ॥ इति

मकरादिभषट्सुसंस्थिते ध्रुमणावुद
गयनंप्रचक्षते ॥ कर्कादिभषट्सुवैयदा
अयनंदक्षिणकंवदेत्तदा ॥ १४ ॥

दोहा ॥

मकरादिक षट्पराशि रवि, उत्तर अयन बखानु ॥
दक्षिणको पुनि अयन कहु, जब करकादिक भानु १४

अथान कथनम् ॥

मकरके सूर्यनके कुछ पहिलेसे उत्तरायण औ
कर्कके सूर्यनके कुछ पहिलेसे दक्षिणायण सूर्य
होते हैं छः छः महीना उत्तरायण दक्षिणा यन
सूर्य होते हैं जैसे इस जन्माङ्गचक्रमें वृषके सूर्य
उत्तरायणके हैं ॥ १४ ॥

सदाचैत्राद्व्याधुगयुगचमासान्
रविमितान्वसंतादीं जानन्षड्ऋतुषुसं
ख्यांप्रणिहितान् ॥ तदामासंब्रूयात्स्थि
तद्विमणिराशियदिगणे त्सदावैवैशा
खात्प्रथमअजराशिप्रसहितात् ॥ १५ ॥

दोहा ॥

चैत माससे मास सब, दुइ २ जो गनि लेय ॥

ऋतु वसंत आदिक छयू, क्रम क्रम ही कहि देय ॥
सोरठा ॥

मास तुरत कहि देय, उसही क्रमते समुझि हिय ॥
सूरज तक गनिलेय, मेष धरै वैशाखमें ॥ ३५ ॥

अथ ऋतुजाननेकी युक्ति ॥

चैत्रसे दुइ२के वारहौ महीना गनै क्रमसे वसंतादिक
छयौ ऋतु इजानै यथा चैत्र वैशाखमें वसंत (१)
ज्येष्ठ आषाढ़में ग्रीष्म (२) श्रावण भादौमें वर्षा (३)
कुआंर कार्तिकमें शरद (४) अगहन पषमे हेमंत
(५) माह फाल्गुनमें शिशिर (६) (उदाहरण) जैसे
चेतरामको ज्येष्ठका जन्म है तौ ग्रीष्म ऋतु
भई इति ॥

अथ मासजाननेकी युक्ति ॥

मेषके सूर्यनमे वैशाख सदा होता है इसही
क्रमसे वारहौ राशिके सूर्यनमें वारहौ महीना
जानै (उदाहरण) जैसे चेतरामका जन्म वृषके सूर्य
नका है तौ ज्येष्ठाका जन्म ठहरा ॥ ३६ ॥

तथैवसूर्याद्वर्णयेच्चचंद्रं चेज्जायतेस
प्तमराशिवर्ती ॥ तदाभवेज्जन्मनिशुक्ल
पक्षमतःपरस्तात्प्रवदेच्चकृष्णम् ॥ १६ ॥
दोहा ॥

सूर्यन ते जो चंद्रमा, सात राशिलौ होय ॥
शुक्लपक्ष वाको कहै, अधिक कृष्णको सोय ॥ १६

अथ पक्ष जाननेकी युक्ति ।

जिसके जन्माङ्ग चक्रमे सूर्यनसे सातराशिके
भीतर चंद्रमा होय तौ शुक्लपक्षका जन्म औ सा-
तसे अधिक होइ तौ कृष्णपक्षका जन्म जानिये
(उदाहरण) जैसे चैतरामके जन्माङ्गचक्रमें सूर्यनसे
वरहें चंद्रमाहै इससे कृष्णपक्षका जन्म ठहरा १६

सदाऽमायुतोजन्मपत्र्यांरविस्थित्त
थासार्धद्वेद्वेतिथियस्सुगुण्यात् ॥ हिमां
शोस्समीपंतिथियत्प्रसंख्यांलभेतां वदे
द्वागपतेस्सुप्रणीताम् ॥ १७ ॥

दोहा ॥

होइ जहां रवि अमा तहँ, तिथी अढ़ाई राखु ॥
क्रमहीं क्रम गनि चंद्रतक, जन्मकेरि तिथि भाखु ॥

अथ जन्मकीतिथिजाननेकी युक्ति ।

जन्माङ्ग चक्रमें जहां सूर्य्य होय तहां अमावस जानै वहांसे हरकोठेमें अढ़ाई २ तिथी समुझि चन्द्रमा तक गनि एकैमें जोरि जैहोय तै बतावै (उदाहरण) चेतारामके जन्माङ्ग चक्रकी लग्नमें सूर्य्य वृष राशिके १८ अंशमेंहैं इससे उस कोठेमें आधी तिथि छांडिकै दुइ तिथी समुझि देखा सूर्य्य-नसे चन्द्रमा वरहै अश्वनीके दूसरे चरणका है। इससे इस मेंसे अढ़ाई माकी एकौ तिथि नहीं ली क्योंकि ॥ चन्द्रमा अभी मेषमें आवै शिर्फहै अंश बहुत कमहैं औ सूर्य्य चन्द्रमाके बीचमें १० कोठाहैं। उसकी दश अढ़ाई पचीस तिथी । भई औ दुइ लग्नकी सबै सत्ताइस तिथी भई । तिसमें १५ का भाग दीन्हेसे कृष्णपक्षकी द्वादशी

मधोस्सितात्संगणितं चमासंसाधैक
गुण्यंगतवासरारुच्यम् ॥ भजेन्नगै (७)श्चा
पिगणेच्चशेषवर्षे सवारात्स्फुटवासर
स्यात् ॥ १८ ॥

सवैया ॥

चैतसे मासहि डेउढ़कै गत पक्षहुके दिनलै उरधारै॥
शोधि भली विधि वामहं जोरिंकै सातसों भाग दै
खूब विचारै ॥ राजहिंसे गनि वार कहै पुनि ज्यो
तिषको केहि काज निहारै ॥ भयनहि नेकहु चित्त
धरै कहि प्रक्षकको मन सोच निवारै ॥ १८ ॥

अथ जन्मको वार बतावैकी युक्ति ॥

चैत्र शुक्लकी परेवासे महीना गनि डचौढे
करै बीते पक्षके दिन उसीमें जोरिदेय सात
का भाग लेय जैसे सब चैते वार जानी । राजासे
गनिकै ॥ चैत्र शुक्ल परेवाका जो दिन होइ सो
राज १ कहावतहै साल भरि लगे ॥ (उदाहरण

जैसे चैतरामका किस दिनका जन्महै सो खयाल
करौ कि ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी का जन्महै बुधके
रोज का सो पहिले तौ चैत शुक्ल (१) से गना तौ
वैशाख बदी अमावस तक (१) महीना भया
डचौठ कीन्हे डेढ़ भया विता पक्षके दिन (२६)
भये कुल्य जोडे साढे सत्ताइस भये सातसे भाग
लीन्हे सात त्रिकु (२१) भये औ बचे साढेछः तौ
उस सालके राजा बृहस्पति से गना तौ बुधके
दुपहर के भीतरका जन्म ठहरा ॥ १८ ॥

॥ इति ॥

कार्तिकाद्विगुणं मासं कृत्वा च तिथिसं
युतम् ॥ सप्तभिश्च हरेन्द्रागं नक्षत्रं प्रवदे
क्रमात् ॥ १९ ॥ श्रीः ॥

दोधक छंद ॥

कार्तिक मास से दून करीजै । वीत तिमासके रोज
गनीजै ॥ एक जोरि सत्ताइस भागै । शेष नक्षत्र
यथा क्रम लागै ॥ १९ ॥ ॥

अथजन्मनक्षत्रजाननेकीयुक्ति ॥

कार्तिकसे महीना दून करै वीते पक्षके दिन जोरै
एक और मिलावै सत्ताइस का भाग देइ जै वचै
तौन जन्म नक्षत्र जानै अश्वनीसे गनि लेइ ॥

(उदाहरण) चैतराम का जन्म नक्षत्र सुनौ
कि ज्येष्ठ कृष्ण १२ का जन्म है तौ कार्तिकसे
वैशाख तक महीना ७ भे दून कीन्ह
१४ भे तिथि १२ मिलाई तौ २६ भे १
और मिलावा २७ भे उस पक्षमें १ नक्षत्र
की वृद्धि है इससे १ और मिलावा २८ भे
२७ का भागलीन्ह १ बचा तौ अश्वनी नक्षत्र
का जन्म ठहरा ॥ १९ ॥ इति

भानुभं गणयेत्पुष्याच्छ्वणाच्चं
द्रुमं तथा ॥ चैकीकृत्वाक्रमाद्योगान्वि
कुंभादीन्वदेत्क्रमात् ॥ २० ॥

दोहा ॥

पुष्यते भानु नक्षत्र गनि, श्रौ न ऋक्षते चंद ॥
सत्ताइसको भागलै, योग कहति कवि वृंद ॥ २० ॥

अथ विष्कुंभादि योग बनानेकी युक्ति ॥

पुष्य नक्षत्रसे सूर्यके नक्षत्र तक गनै औ श्रवणसे जिस दिनका योग जाननाहो तिस दिनके नक्षत्र तक गनै इकट्ठा करि २७ से भागले शेषको विष्कुंभसे गनि योग बतावै (उदाहरण) चैतरामक जन्म किस योग काहै तौ पुष्यते सूर्य नक्षत्र रोहिणी तक २४ भे औ श्रवणसे जन्म नक्षत्र अश्वनी तक ७ भे सब इकट्ठा कीन्ह ३१ भे भागलीन्ह ४ बचे विष्कुंभसे गना तौ सौभाग्य नाम योग का जन्म ठहरा ॥ २० ॥

प्रथमतश्चतिथिं द्विगुणांचरेत् विगत
सैकतिथिंमुनिभिर्भजेत् ॥ विदितशेष
सुअंशतिथौभवेत् कथितकर्णबवादिक्र
माद्वदेत् ॥ २१ ॥

छंद त्रिभंगी ॥

दुगुनी तिथि करिये, एकहि गरिये, सातसौं हरिये,
शेजानमें॥बव आदिक जानिय,सातहु मानिय कर्ण

वखानिय, देशनमें॥तिथि अर्ध कहावाहिं, अंतम
धावाहिं,आदिम आवहिं,आदिहिते॥यह रीति विशे-
षी, अद्भुत देखी, द्विजहित लेखी,वादिहिते॥२१॥

अथ जन्मको कर्ण जाननेकी युक्ति ॥

जिस दिनका जन्महो उसी तिथिको शुक्लपक्षकी
परेवासे गनि दून करै १ कमकरै ७ सों भागलेइ,जै
शेषवचै तौनववादिक ७ में क्रमते कर्ण जानी ।
शेष नीकसी तिथिके परार्द्धमें कर्ण मिली औ पूर्वा-
र्द्धमें उस कर्णके पहिलेका कर्ण होइ (उदाहरण)
जैसे कि किसीकी जन्म तिथि कृष्णपक्षकी द्वादशी
है जो शुक्लपक्षकी परेवासे गनै तौ पूर्णमासी तक
१५ भये औ १२ द्वादशी के १२ और
मिलाये तौ २७ भे दून कीन्ह तौ ५४ भे एक
कम कीन्ह ५३ रहे सातसे भाग लीन्ह तौ सात-
सती ४९ भे चारि बचे तौ चौथौ कर्ण द्वादशी
के परार्ध में ठहरा जिसका तैतिल नाम है और
पूर्वार्धमें उसके पहिले को कौलव नाम कर्ण कह-
दो जरूर होगा सो येई ७ कर्ण चरहै ॥ २१ ॥

सदैवशुक्लप्रतिपत्सुसंस्थितौ कर्णौ हि
किंतुघ्नववार्धसंज्ञकौ ॥ कृष्णे परेभूत
(१४) तिथौ हि शाकुनिश्चतुष्पदो नागयु
तोकुहस्थितः ॥ २२ ॥

दोहा ॥

शुक्ल एक किंतुघ्न वव, कृष्ण चतुर्दशि भाग ॥
पश्चिममें शकुनी करण, अमा चतुष्पद नाग ॥ २२
अब चारों स्थिर कर्णोंके बनानेकी युक्ति यह है ॥

कि सदा शुक्लपक्षकी परेवाके पूर्वार्धमें किंतुघ्न
औ परार्धमें ववकर्ण होता है औ कृष्णपक्षकी चौद
शिको परार्ध में शकुनी कर्ण होता है और अमा-
वसके पूर्वार्ध में चतुष्पद औ परार्धमें नाग कर्ण
होता है ॥ २२ ॥

सूर्याल्लग्नगणेद्धीमान्सरघ्नकारये
द्वधः पश्चात्किंचिच्चरेन्यूनं छणादिष्टं प्रव
र्तयेत् ॥ २३ ॥

खानेअगरसातवे ॥ तस्माद्देहत्रिकोणके
पिचयदापैदाहुआवख्तहो दृष्ट्वावाक्प
तिनास्फुटं विरंचितं होवैसहीलग्नसो २४ ।

छंद भुजंगप्रयात ॥

करै चांद जिस लग्नमें मालकाना ॥ तहांते गनै बाण
नद्रोके खाना ॥ वहांसे गनै लग्न फिरि सातईलौ ॥
कहैं शुद्ध जो नंद औ पांचईतौ ॥ २४ ॥

अथ लग्नशोधनेकी युक्ति ॥

चन्द्रमा से ५ या ९ तहांसे ७ या वहाँसे
५ या ९ कोठोंके भीतर लग्नहोइ तौ शुद्धहै
(उदाहरण) यथा चेतारामके जन्माङ्गचक्रमें चन्द्रमा
से ५ कोठा बीच रहे दूसरेहे कोठेमें लग्नहै
इससे ये जन्म लग्न शुद्धहै इसी तरह जन्माङ्ग
चक्र शुद्ध करिलेइ ॥ २४ ॥ इति

सूर्याच्चलग्नं यदि षट्गृहांतरे भवेत्तदा
जन्मदिवावदेद्बुधः ॥ स्यात्सप्तमे यस्य च

(५०)

नष्टजन्माङ्गदीपिका.

तस्यसायंतदन्यथाचेजननं निशायाम्

नराच छंद ॥

सूर्य्य ते जो लग्नहोय गेह षट्के अंतरे ॥ तदा दि
वाक जन्म होय सात सामके परे ॥ आठसे लगाइ
वारहौ लगे लगनरहै ॥ तदा निशाके जन्मको तु
रंतहै मगन्कहै ॥ २५ ॥

अथ दिन या रातिके जन्म जाननेकी युक्ति ॥

सूर्य्यसे जो लग्न छः घरके अन्तरमें होइ
तौ दिनका जन्म है औ जो सातमें होइ तौ साम
का औ सातसे वारह तककी लग्नहोइ तौ रात्रिका
जन्म औ जो लग्नमें सूर्य्य होइ तौ प्रातःकाल का
जन्महै इसी हिसाबसे दुपहर या अर्धरात्रि या
और कोई बेला जो पूंछी जाय सो बता सकतेहौ
(उदाहरण) चैतरामके जन्माङ्ग चक्रमें लग्नमें सूर्य्य
हैं इससे प्रातःकाल का जन्म ठहरा ॥ २६ ॥

रविराहुकुजांकानिलयाङ्गेनचयोज

येत् ॥ त्रिभिर्भागावशेषेचखैकेनीरीद्वि
येपुमान् ॥ २६ ॥

मालिनी छंद ॥

रवि कुज तनु अँकै राहुके अंकजोरै ॥ तुरत शिवनेत्रै
भाँगदै शेषकोरै ॥ कहति विखम १ खाँके कन्यका
केरि सोई । रहति यदि समाके २ पुत्रकी पत्र होई ॥

अथ स्त्री पुरुष का जन्माङ्ग जाननेकी युक्ति ॥

सूर्य्य राहु मंगल ये तीनो ग्रह जिन जिन राशि
के अँकों में होई उन तीनों अँकों को औ जन्म
लग्नको एकै में जोरि ३ से भागलै जो शेष एक या
शून्य बचै तौ स्त्रीकी औ जो दुइ बचै तौ पुरुषकी
जन्म पत्र जाननी कोई कोई आचार्य्य मंगलकी
राशिके अंक नहीं जोरतहैं (उदाहरण) जैसे चेत
रामके लिखे जन्माङ्गचक्रमें देखौकि रविके दो अं
कहैं औ राहुके सातहैं औ मंगलके बारह औ लग्न
के दुइ ए सब एकमें जोड़े तौ २३ भे तीनसे भाग
लीन्ह तौ तीनसते २१ औ दुइतेइस २ ब
चे तौ यह जन्म पत्र पुरुषै का ठहरा ॥ २६ ॥ इति ॥

प्रश्नां करं धरस्थ भजन्मलग्नं एकत्र युक्तं
वसुनाथ गुण्यम् ॥ लग्नेश भक्तं समं शून्यशे
षे मृतं भवेद्विषमे जीवितं च ॥ २७ ॥

गीतिका छंद ॥

जब प्रश्न कर तिक अंकको निरसंक जल मम जो
रिहो ॥ तब अष्ट मस्थभ युक्तकै वसुनाथ गुण
कव होरिहौ ॥ लग्नेश भक्त तुरंतकै सम शून्य वच
तहि माखिये ॥ यमलोक वसति सुकर्मकै विष
में सुजीवित भाषिये ॥ २७ ॥

अथ मरे वा गैरमरे मनुष्यके जन्माङ्ग

से मरा या जीवत जानै ॥

प्रथम यह कि जब कोई प्रश्न करै कि यह जन्म पत्र
मरे काहै या जीवत पुरुषका तब उसी प्रश्न लग्नके
अंकको लिखि लेइ फिरि अष्टम भावका अंक औ
जन्म लग्नका अंक इकट्ठा जौरै अष्टमेशसे
गुणै औ लग्नेशसे भाग देइ जो सम या

शून्य बचै तौ मरे मनुष्यका जो विषम
बचै तौ जियत मनुष्यका जन्म पत्र जानिये
(उदाहरण) जैसे किसीने पूछाकि कहौ इस जन्म
पत्रवाला जियतहै या मरा तौ देखाकि उस सम-
य प्रश्न लग्न कन्याहै औ अष्टम भावका अंक ९
औ जन्म लग्नांक २ सब जोड़े १७ भे अष्टमे-
श बृहस्पति अर्थात् ५ से गुणा तौ ८५ भे औ
लग्नेश शुक्र अर्थात् ६ से भागलीन्ह तौ एक
बचा कहाकि कुण्डली वाला जियतहै ॥ २७ ॥

मात्राश्चतुर्गुणाः नाम्नोद्विगुणाऽक्षरसं
युताः॥ त्रिभिर्भक्ताः द्विशेषस्त्रीमियतेखै ०
क१योःपुमान् ॥२८ ॥

वसंत तिलक छंद ॥

नामौके अक्षर गनै दुगुना करैजो॥मात्राक चौ-
गुन धरै लगुना टरैसो । पैतीनिसे पुनिहरै खेके प
रैजो । नासैयते युगपरै तिरिया मरै सो ॥ २८ ॥

अथ स्त्रीपुरुषमें कौनंपहिले मरी तिरुकेजाननेकीयुक्ति॥
 स्त्रीपुरुषदोनोंके नामके अक्षर दून करै औ मात्रा
 चौगुणाकरै तीनिसे भाग लेइ जो दुइ बचै तौ स्त्रीप
 हिले मरी औ जो एक या शून्य बचै तौ पहिले पुरु
 षमरी अब मात्रा पहिचाननेकी युक्ति लिखतेहैंके
 छोटे अक्षरमें १ मात्रा औ बड़ेमें दो औ छुत
 अर्थात् गोहरातेमें जौन अक्षर अंतका देर तक
 कहा जाय उसमें (३) औ जो स्वरहीन हो
 तौ उसमें आधी मात्रा होतीहै ऐसे जोरि कहि
 देय ॥ २८ ॥

त्रयंतिथौकृतं मासेदिग्ज १०न्मर्क्षेच
 येजिते ॥ लग्नेशरं ५ गुणं ३ वारेजन्मा
 द्गर्भस्यलक्षणम् ॥ २९ ॥

तोटकछंद ॥

तिथिमें जब तीन मिलाइ कहौ। पुनि मासनमें तब
 वेद ४ चहौ ॥ दशजोरि नक्षत्तरमें तुरतै ॥ सर ५
 लग्न ममेलि धरै फुरतै ॥ जब वारम तीनि मिलाइ
 सही । तब जन्मते गर्भ तुरंत कहौ ॥ यहरीति

द्विजातिनके हितकी । सर्व भापि दर्ई अपने
चितकी ॥ २९ ॥

अथ जन्मसे गर्भकादिन बतावैकी युक्ति ॥

जन्मकी तिथिमें ३ मिलाय औ जन्मके महीना
में ४ औ जन्म नक्षत्रमें १० औ जन्म लग्न
में ५ औ जन्म वारमें ३ जोड़ै तौ तिथि
आदि निकसैं सो सो गर्भके बतावै (उदाहरण)
चेतरामकी जन्म तिथि १२ तिसमें ३ मिला
नेसे कृ, प, की १४ औ जन्म का महीना ज्येष्ठ
तिसमें ४ मिलानेसे भादों औ जन्मका नक्षत्र १
तिसमें १० मिलादेनेसे मघा औ जन्म लग्न वृष
तिसमें ५ मिलानेसे कन्या औ जन्म वार बुध
तिसमें ३ मिलानेसे शुक्र वारका गर्भ ठहरा २९ ॥

तिथिवारंचनक्षत्रं नामाक्षरसमन्वित
म् ॥ मुनि (७) भक्तंसमेसेपेकन्याचविषमे
सुतः ॥ ३० ॥

मोदक छंद ॥

वार तिथी अरु ऋक्ष मिलावहि । नाम सुगर्भव-
ती कहँ पावहि ॥ जोरत सातक भागु समे पुनि ॥
जानि सुता विषमें सुतकी गुनि ॥ ३० ॥

अथ गर्भवतीके पुत्र कन्या होनहार बतानेकी युक्ति ॥

जिस समय कोई प्रश्न करै कि अमुक स्त्रीके पुत्र
होई या कन्या तब उसी समयके तिथि वार नक्ष-
त्रों को एकैमें जोरि उसीमें वही गर्भवती स्त्रीके
नामके अक्षर मिलाय सातसे भागलेइ जो सम
बचैं तौ कन्या औ जो विषम बचैं तौ पुत्र पैदा
होइ ॥ ३० ॥

मुखेतिलंयस्यचतस्यलिंगे अक्षणोर
धस्तस्यचकुक्षिगंस्यात् ॥ भुजे भ-
वेत्तस्यचमूलजन्मपूर्वाद्वितीयेजननंशु
देहे ॥ ३१ ॥

रोलाछंद ॥

देखि कै मुख मध्यमें तिल लिंगमें कहि देहु ॥
अक्षणी तर हेरि कै तेहि कुक्षि में पुनि लेहु ॥
होइ जो भुज मध्यमें तिल मूल जन्म बखानु ॥
पूर्वा आषाढ़ जनि नर सोन अंगम् जानु ॥ ३१ ॥

अथ गुप्त तिलादिक जाननेकी युक्ति ॥

जिस मनुष्यके नासिका पर तिल होइ उसके
लिंग या योनिपर तिल जरूर होगा कहदो । और
जिसके आंखके तरे तिल होय उसके कोखमें औ
जिसके भुजापर तिल होइ उसका मूलनका जन्म
औ जिसका पूर्वाषाढ़ नक्षत्रका जन्म होइ उसके
अंगमें कहीं लहसुन होगा समुझिके कहदो ॥ ३१ ॥

इतिमेकथितं सर्वजातकं नष्टवर्तनम् । सर्वे
षांसुखदं साक्षाद्ब्रह्माश्चर्य्यकरं परम् ॥ ३२ ॥

दोहा ॥

इहाँ लगे सबु वर्तिवो, नष्टकेर कहि दीन्ह ॥ विद्व-

(५८)

नष्टजन्माङ्गदीपिका.

जन सुखदाइ अति, बहु अतिर्य्य मतकीन्ह॥३२॥

यहांतक सब नष्ट जन्म पत्र-वर्तनेकी युक्ति कहदी
जिसमें खुलासा बहुत आश्चर्य्य कारक सर्व मनु-
ष्योंके सुखदाई अनेक विधि से तत्त्वोंजै कहींहैं ॥ ३२

इति श्रीश्रीमन्महाराजत्रिपाठी विद्वद्वर जीव रक्षण
सुत पण्डित वाचस्पति विरचिता नष्टजन्माङ्ग दी-
पिका समाप्ता शुभमस्तु श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥श्रीः॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” छापाखाना—मुम्बई.

इति

नष्टजन्माङ्गदीपिका.

समाप्ता ।

जाहिरात ख्यालोंकी

राजारीसालु नोपदेको० ख्याल	डुगजी झवारजीको
सुलतान न्यालदेको	छोटे कंथको
दुल धाडीको	जुरीको
सोदागरबजीरजादीको	गोपीचंद मोतिनाइको
रुप वसंतको	वज्र मुकटको
चंद्रप्रभाको	चंदकवर सेंठाणीको
लैलीमजनुको	रांजाहीरुको
हरीचंद तारामतीको	कलकतेकी षानगीयाको
सजादा सुलतानको	इंद कँवरको
दयाराम धाडवीको	कवाठको
सुलतान बादस्याको	वीण जारको
गोपीचंदको	नोरंगस्या शिवराजको
भस्थरीको	शिवी राजाको
विक्रमा परवीण परिको	चवकववीणको
इंद्रसभाको	हरिचंद राजाको
मालदेहाडी रानीको	चीत्र मुकटको
अमारसिंगहाडी रानीको	सहजादो प्रल्हादको
जगदेव कंकालीको	बिरमसिंगनोटकीको
बारामासीयासंग्रह	भाऊसिंहसिधीयको

जाहिरात.

भारवाड़ीभाषाके ख्याल ।

नाम.	की.	र. आ
गुलबहारलावणी व ख्यालाततुरी.....	०-४	
सहजादेकावड़ाख्याल झालीरामकृत.....	०-३	
दयारामधाड़वीको ख्याल प्रल्हादीरामको बनायो.....	०-३	
सहाजादाकोख्याल प्रल्हादीरामकृत.....	०-३	
नौरंगसाहशिवराजबलीकोख्याल	०-४	
शिबीराजाकाख्याल	०-३	
गोपीचंदकोख्याल	०-२	
सुलोचनाकोख्याल	०-२	
चंद्रभानुकोख्याल	०-३	
भोरध्वजकीलावणी	०-१	
विधवादुर्दशा नाटक	०-२	
बूढेवालमका ख्याल	०-२	
निरधुंधका ध्यान.....	०-१॥	
नागोरी छेलाको ख्याल	०-२	

जाहिरात ।

श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण

श्रीपं० ज्वालाप्रसादजी रचित—केवल भाषा

इसमें सब अलंकारों समेत प्रतिसर्गके आदि
अंतका प्रतीकको एक २ श्लोक है. पुस्तक
दो जिल्दोंमें बहुत पुष्ट बँधी है मूल्य केवल
१० रु० मात्र है और भाषाटीका सहित २२ रु० ॥

घुवंश भाषाटीका.

इसमें प्रत्येक श्लोकका अन्वय वाच्यपरिवर्तन सरलार्थ
भाषार्थ तथा गूढ़ाशयोंके स्पष्टीकरणार्थ टिप्पणीभी डाली गई
है जिससे विद्यार्थियोंको विद्योन्नतिमें परमोपयोगी है.
मूल्य केवल ३॥ रु० है.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना

खेमराज श्रीकृष्णदास

“ श्रीवेंकटेश्वर ” छापाखाना

मुंबई.

१ श्रीमद्रास्वामितुलसीदासकृत रामायण सटीक ।

पं० ज्वालाप्रसादकृतटीका

लीजिये रामायण सटीकभी लीजिये असल पुस्तक श्रीगुसाईजीकी लिपिके अनुसार व संपूर्ण क्षेपको सहित बिसमें शंका समाधान अद्यापर्यंत विस्तार पूर्वक लिखे हैं इसके टीकाकी रचना बहोत उत्तम और अपूर्व मनभावन सुख उपजावन राम यश पावन है, की० ८ रु० ८० म० २ रु०

२ रामायण बडा ।

सहित श्लोकार्थ गूढार्थ छन्दार्थ स्तुत्यर्थ शंकासमाधान और तुलसीदासजीका जीवन चरित्र, रामवनवास तिथि-पत्र रामाश्वमेध लवकुशकाण्ड माहात्म्य और बरवारामायणके जिस्में पंचीकरणका बडा नकशा और ३८०० कठिन २ शब्दोंके अर्थ लिखे हैं की० ५ रु० रफ ४ रु०

३ रामायण मझोला ।

ऊपरके सब अलंकारों सहित इसका सांचा छोट्टा है अक्षर सामान्य है कीमत २॥ रु० रफ १॥

४ रामायण गुटका ।

यहभी पूर्वोक्त सब अलंकारोंसे पूरित है साधु तथा देशाटनकरनेवालोंके अत्यंत उपयोगी है कीमत १ रु० है पुस्तक मिलनेका ठिकाना—खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना मुंबई.

जाहिरात.

पुस्तकोंका नाम.	रु० आ०
ब्रजविहार नारायणस्वामी रचित २ ०	
आल्हामहाभारत सभापर्व ० १२	
महाभारत सबलसिंह (१८) पर्व ३ ८	
शुक्रनीति भाषा टीका १ ८	
सुन्दरीतिलक ० ६	
रामचन्द्रिका सटीक (केशवदासकृत) २ ०	
रघुराजविलास ० ५	
स्वाँगविस्मिलपरीवार (इश्कचमन) ० ८	
दम्पतिषाक्यविलास ० ८	
दयानन्दतिमिरभास्कर दयानन्दियोंका	
मुख मोड़नेको उत्तम है ३ ०	

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
“श्रीवेंकटेश्वर” छापाखाना—मुंबई.

१ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत रामायण सटीक ।

पं० ज्वालाप्रसादकृतटीका

लीजिये रामायण सटीकभी लीजिये असल पुस्तक श्रीगुसाईजीकी लिपिके अनुसार व संपूर्ण क्षेत्रको सहित जिसमें शंका समाधान अद्यापर्यंत विस्तार पूर्वक लिखे हैं इसके टीकाकी रचना बहोत उत्तम और अपूर्व मनभावन सुख उपजावन राम यश पावन है, की० ८ रु० ८ म० २ रु०

२ रामायण बड़ा ।

सहित श्लोकार्थ गूढार्थ छन्दार्थ स्तुत्यर्थ शंकासमाधान और तुलसीदासजीका जीवन चरित्र, रामवनवास तिथि-पत्र रामाश्वमेध लवकुशकाण्ड माहात्म्य और बरवारामायणके जिस्में पंचीकरणका बड़ा नकशा और ३८०० कठिन २ शब्दोंके अर्थ लिखे हैं की० १५ रु० रफ ४ रु०

३ रामायण मझोला ।

ऊपरके सब अलंकारों सहित इसका सांचा छोट है अक्षर सामान्य है कीमत २॥ रु० रफ १॥

४ रामायण गुटका ।

यहभी पूर्वोक्त सब अलंकारोंसे पूरित है साधु तथा देशाटनकरनेवालोंको अत्यंत उपयोगी है कीमत १ रु० है पुस्तक मिलनेका ठिकाना—खेमराज श्रीकृष्णदास

श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना मुंबई.

